कैलाश, भार्गव, शाह, पंवार, मिश्रा का मंत्री बनना तय

पहले पेज से जारी...

शिवराज की केबीनेट के भरोसेमंद साथियों में शुमार कैलाश विजयवर्गीय, गोपाल भार्गव, अनूप मिश्रा, नरोत्तम मिश्रा, जयंत मलैया, विजय शाह, लक्ष्मीकांत शर्मा नागेन्द्र सिंह, जगदीश देवड़ा और तुकोजीराव पवार का मंत्री बनना लगभग तय है. इसके अलावा पारस जैन, मोती कश्यप, मीना सिंह, जगन्नाथ सिंह अंतर सिंह आर्य, राव देश राज सिंह, रंजना बघेल, नारायण कुशवाह के भी मंत्री बनने की भी संभावना है. राघवजी फिर शिवराज केबीनेट के खजाने के मालिक बनेंगे यह भी तय है. अटल सरकार में स्वास्थ्य राज्य मंत्री रहे सांसद सरताज सिंह भी शिवराज केबीनेट में दस्तक देते दिखाई दे रहे हैं. बाबूलाल गौर मंत्री पद छोड़ विधानसभा अध्यक्ष की कुर्सी को सुशोभित कर सकते हैं तो ईश्वर दास रोहाणी मंत्री बन सकते हैं. अर्चना चिटनीस और नीता पटेरिया के बीच महिला एवं बाल विकास मंत्री बनने के लिये होड़ है. कुर्मी समाज के प्रतिनिधित्व के दावे के साथ वरिष्ठ सांसद से विधायक बने रामकृष्ण कुसमारिया की जगह भी केबीनेट में पक्की लगती है. इसके अलावा प्रेमनारायण ठाकुर, राजेन्द्र शुक्ला, खुमान सिंह शिवाजी, ओमप्रकाश सकलेचा, दीपक जोशी, ज्ञानसिंह, भगतसिंह नेताम और उमा शंकर गुप्ता की भी मंत्रीपद के लिये मजबूत दावेदारी है.

बाबूलाल गौर बनेंगे स्पीकर, रोहाणी होंगे मंत्री

ग्रहों के उलटफेर से राजनीति में विस्फोटक स्थितियां बनेगी

आतंक और उत्पात का कारक शुक्र ग्रह मकर राशि में पहुंच गया है। यहां वह 28 दिसंबर तक रहेगा। इसके बाद वह कुंभ राशि में चला जाएगा। अगले साल मई महीने में एक बार फिर गुरु और शुक्र का मिलन होगा।

ग्रहों के घमासान से मनुष्य जातक भी अछूते नहीं रहेंगे। नौ दिसंबर से राहू, शुक्र और गुरु में जंग शुरू हो गई है। गुरु भी धनु से निकलकर मकर राशि में आ गया है। दिसंबर में अन्य दूसरे ग्रह भी अपनी राशियां बदलेंगी। पंडितों की नजर में यह ऐतिहासिक परिवर्तन का दौर है। आठ दिसंबर को बुध भी वृश्चिक से धनु राशि में आ गया है। 15 दिसंबर को सूर्य का वृश्चिक से धनु में तथा 19 दिसंबर को मंगल का वृश्चिक से धनु राशि में जाना होगा। चंद्रमा भी हर सवा दो दिन में राशियां बदलता रहता है। पंडित बताते हैं कि इन ग्रहों के कारण 19 दिसंबर तक देश में कहीं भी भूकंप आ सकता है या राजनीति में विहंगम और विस्फोटक स्थिति निर्मित हो सकती है।

मकर के घर में शुक्र का आना खतरनाक

चतुर्ग्रही : मकर राशि में इस बार चतुर्ग्रही योग बन रहा है। 28 और 29 दिसंबर के तड़के 5.03 बजे यह योग बनेगा। इसके साथ ही गुरु, शुक्र और राहू के अलावा चंद्रमा भी मकर राशि में आ जाएगा।

क्या क्या हो सकता है : पंडित विष्णु राजौरिया कहते हैं कि मकर में राहू, शुक्र और गुरु के कारण देश में शिखर पुरुषों को परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। पंडित विनोद गौतम के मुताबिक राहू दुर्घटनाओं को जन्म देता है। राजनीति पर भी यह ग्रह असर डालेगा, जिससे विस्फोटक स्थितियां बनेंगी। राहू के कारण दुर्घटनाओं के आसार बढ़ गए हैं। यह ग्रह शुक्र को भी अपने अधीन कर लेगा। मकर राशि में शुक्र का दबदबा बढ़ गया है। पहले उसमें एक ही ग्रह था लेकिन अब दो ग्रह हो गए हैं। राहू से मेल जोल के कारण उनकी ताकत में कई गुना इजाफा हो गया है। यह स्थिति विमान दुर्घटनाओं का कारण बनती है और इस तरह की अचानक होने वाली घटनाओं में वृद्धि करती है।

आम चुनाव के लिए आएंगी नई ईवीएम

दिल्ली के मतदाता लोकसभा चुनाव में नई इलेक्ट्रानिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) का बटन दबाकर मतदान करेंगे। अगामी लोकसभा चुनाव में करीब 15 हजार मशीनों की आवश्यकता होगी।दिल्ली के पास करीब 12 हजार ईवीएम हैं। विधानसभा चुनाव में 21 हजार मशीने मंगाई गई थी। इस्तेमाल में करीब 12 हजार मशीनें आई हैं जिसे कम से कम छह महीने रिर्काड के तौर पर सुरक्षित रखने की अनिवार्यता है। लोकसभा चुनाव में 15 हजार मशीनों की जरूरत होगी। चुनाव आयोग से अनुमति के बाद ही मशीन खरीदने का आर्डर दिया जाएगा। पुरानी मशीन की तुलना में नई ईवीएम तेज गति वाली और आकार में छोटी होगी।

इस बार भी कई दागी बन गये विधायक

मध्यप्रदेश के सेवदा, जयसिंह नागर, कसरावद ओर कोलमा मे आखिर क्या समानता है। इन चार निर्वाचन क्षेत्रों के लगभग 6 लाख मतदाताओं के समझ इसके सिवा कोई रास्ता नही था कि वे आपराधिक रिकार्ड वाला विधायक चुने। यह मजबूरी इसलिए भी थी क्योंकि एक भी उम्मीदवार ऐसा नही था जिसका रिकार्ड साफ सुथरा हो। इस सप्ताह मध्यप्रदेश छत्तीसगढ़ राजस्थान ओर दिल्ली मे हुई मतगणना के विश्लेषण से यह पता चलता है कि आपराधिक रिकार्ड वाले राजनीतिज्ञों को टिकट भी मिल रहा है ओर वे चुनाव भी जीत रहे हैं हालांकि उपनी संख्या मे कमी आयी है। दिल्ली मे चुनाव जीतने वाला हर तीसरा विधायक आपराधिक रिकार्ड वाला है जबकि मध्यप्रदेंश के छह विधायकों मे से एक आपराधिक रिकार्ड है। इसी तरह राजस्थान के 9 विधायकों मे से एक आपराधिक दागी हैं चुनावी आयोग को दिए गए शपथ पत्रों से आंकड़ों की यह बाजीगरी उजागर हुई है। छत्तीसगढ़ मे 22 विधायकों मे से एक दागी है। इसके अलावा राज्य में पिछली विधानसभा मे जहां 14.4 प्रतिशत दागी विधायक थे वही इस बार यह आंकड़ा 4.4 प्रतिशत पर आ गया है। इसका कारण यह है कि सभी राजनीतिक दल यह कोशिश कर रहे है। आपराधिक रिकार्ड वाले कम से कम उम्मीदवार खड़े किए जाएं। म.प्र. मे पिछली बार की तुलना मे दागी विधायकों की संख्या आधी रह गयी है। राजस्थान मे जहां थोड़ी कमी आयी है वही दिल्ली मे इनकी संख्या मे इजाफा हुआ हैं एक विश्लेषक का कहना है कि राजनीति के आपराधिकरण को रोकने मे राजनीतिक इच्छा शक्ति की कमी साफ तौर पर नजर आ रही है।

मन्नत ली है तो चढ़ौत्री भी देना है !

विशेष टिप्पणी

सुरेन्द्र बंसल

शिवराज की मुराद पूरी हुई और लोकतंत्र के देवी-देवताओं से मांगी मन्नत उन्हें मिल गई. जीत से फूले शिवराज शपथ लेकर फिर मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठ गये हैं. शपथ दरअसल एक विश्वास होता है जो यह भरोसा दिलाता है कि शपथ लेने वाला व्यक्ति अपने चाल-चलन और काम को पूर्ण निष्ठा, लगन और बगैर भेदभाव से राष्ट्र - राज्यहित में अपने कर्तव्य के तौर पर प्रतिबद्धता से पूरा करेगा.

12 दिसंबर को जब शिवराजसिंह चौहान ने अकेले शपथ लेकर श्यामला हिल्स के मुख्यमंत्री आवास में रहने का पट्टा लिया तो बहुतेरी जवाबदारियां उन्होंने अपने ऊपर ले ली. ये जवाबदारियां प्रदेश और प्रदेश की जनता के प्रति मुख्यमंत्री पद की शपथ लेते ही शुरू हो गई. राज्य में पांच साल राज करने का विश्वास किसी भी व्यक्ति को लोकतंत्र में यू ही नहीं मिल जाता. जो वादे शिवराज और उनकी पार्टी ने आने वाले राज-समय के लिये गिनवाए है वे वाकई लोकतंत्र के देवी-देवताओं से राज करने के लिये मांगी गई मन्नतें है. लोकतंत्र के देवता शिवराज से प्रसन्न हो गये हैं उनकी आराधना को उन्होंने स्वीकार कर फिर राज करने का आशीर्वाद दिया है. लेकिन अब जवाबदारी शिवराज की है कि इस आशीर्वाद को वे कैसे बनाये रखे है. मांगी गई मुराद जब पूरी होती है तो मन्नत का चढ़ावा भी जल्दी देना पड़ता है. शिवराज के लिये कार्यकाल तो पांच साल का दिखता है लेकिन मन्नत पूरी करने के लिये ज्यादा वक्त नहीं है. जो कुछ उन्हें करना है वह लोकसभा चुनाव के पहले ही करना है आने वाले चार पांच महीने शिवराज सरकार के लिये चढ़ौत्री से लोकदेव को खुश करने का वक्त है. बहुत सी चुनौतियों का हल उन्हें इस बीच करना ही होगा. जिसमें सबसे पहले बिजली और पानी बहुत जरूरी होगा. हालांकि आने वाले चुनाव केन्द्र सरकार के लिये होंगे पर शिवराज का राजपक्ष कसौटी पर होगा. जब बिजली पांच से आठ घंटे की कटौती से मिलेंगी तब भोगी जनता का 'दिग्विजय ब्रांड' कोप क्या फिर नहीं उभरेगा? अभी विधानसभा चुनाव तक राज्य ने 10 रु. प्रति यूनिट की दर से बिजली खरीद कर चुनाव तक का समय निकाल दिया लेकिन आने वाले समय में शिवराज को पर्याप्त बिजली देने की व्यवस्था करना ही होगी. लेकिन बात सिर्फ बिजली पर खत्म नहीं होने वाली, पानी एक अहम चुनौती बनकर शिवराजसिंह के सामने हाहाकार मचाने वाला है. शहरों में पीने के पानी की किल्लत लोग नवंबर से भोगने लगे है यह मार्च-अप्रैल तक विकराल हो सकती है. शहरों की बिजली काट कर किसानों को सिंचाई के लिये यदि बिजली उपलब्ध करवा भी दी तो सिंचाई के लिये पानी कहां से देंगे? कुएं, बावड़ी, नलकूप और नहर तब तक पूरी तरह सूख चुके होंगे तब पानी से जो करंट लगेगा उसे तो भोगना ही पड़ेगा. इससे कैसे निबटा जाए शिवराज को इसके लिये तैयार होना है.

सच यह है ये मुद्दे जो विधानसभा चुनाव में लघु रूप में थे लोकसभा चुनाव आते-आते ऐसे भस्मासुर बन सकते हैं जो विधानसभा जीत की खुशी को निगल जाएगा. लोकसभा चुनाव जीतना शिवराजसिंह के लिये तब कुर्सी बचाने का मामला बन सकता है. इन चुनौतियों के लिये शिवराजसिंह को तैयार रहना है और किये गये वादों को पद की शपथ के साथ एक मन्नत की तरह ही पूरा करने का यत्न आज से और अभी से ही करना पड़ेगा. यही जवाबदारी उन्हें लोकतंत्र से मिली है. क्योंकि मन्नत ली है तो चढ़ौत्री भी देना है!

स्वामी मुद्रक प्रकाशक एवं संपादक उत्तम झंवर द्वारा मे. मोर्या आर्ट प्रा.लि. के लिये अपनी दुनिया प्रिन्टर्स १३, प्रेस काम्पलेक्स एबी रोड इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं ३०५ मोर्या आर्केड १/२ ओल्ड पलासिया, इंदौर में प्रकाशित फोन : ४०४१२६८